: □□□□□□□□□ : □□□□□□□ □□□ (□□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□) पाकिस्तान की मशहूर शायरा □ातिमा हसन □क अखिल भारतीय मुशायरे में हिस्सा लेने के लि□ पिछले दिनों भारत में थीं. इस दौरान चौथी दुनिया (उर्दू) की संपादक वसीम राशिद ने उनसे □क लंबी बातचीत की. पेश हैं मुख्य अंश: -

'□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□, □□□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□ □□□□□. □□□ □□□ □□□□□□□□ □□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□ □□□. □□□□□□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□□□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□, □□□□□□ □□ □□□□□, □□□□□ □□□ □□□. □□□ □□□ □□ □□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□. □□ □□□□□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□□ □□ □□□ □□ □□□□□□ □□□ □□□□□□□□, □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□□.'

- □□□ □□□ □□ □□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□?

-- मेरा जन्म तो कराची में हुआ, लेकिन मेरे माता-पिता का संबंध उत्तर प्रदेश के □ा□ीपुर □िले से है, जहां से वे पाकिस्तान चले ग□ थे. वहां आज भी मेरे मौसेरे भाई-बहन रहते हैं.

- □□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□□?

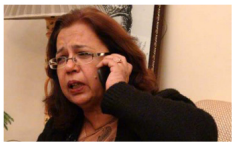

-- मेरे कई रिश्तेदार यहां दिल्ली में भी हैं. जितने मिलने वाले हैं, मैं तो सबको अपना रिश्तेदार समझती हूं. जगन्नाथ आ□ाद साहब जब भी पाकिस्तान जाते थे, मेरे घर ठहरते थे. मुशायरा □त्म होने पर लोग पूछते कि कहां जाना है तो वह कहते कि यहां मेरी बेटी □ातिमा रहती है. हमारा □लम का रिश्ता भी □ून के रिश्तों की तरह स्थिर और पवित्र है.

- □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□?

-- मैं 1973 से निरंतर लिख रही हूं. 1973 में मेरा पहला संग्रह-बहते हु□ फूल प्रकाशित हुआ. इसके बाद दूसरा संग्रह दस्तक से दर का □ासला आया और फिर तीसरा संग्रह यादें भी अब ख्वाब हुईं प्रकाशित हुआ. फिर इन तीनों संग्रहों को □क साथ प्रकाशित किया गया याद की बारिशें नाम से. □क संग्रह जल्द ही प्रकाशित होने वाला है. इसके अलावा कहानियों का □क संग्रह है- कहानियां गुम हो जाती हैं. फिर मैंने पी□चडी की. □ाहिदा □ातून

शरवानयिा अलीग□ में 1894 से 1922 तक थीं. वह पहली ऐसी शायरा थीं, जो पत्रकिाओं में छपती थीं. उन पर काम नहीं हुआ था, मैंने उन पर काम कयिा. वजह, उर्दू अदब के इतहिास में इतनी ब□ी महलिा साहत्यिकार का नाम नहीं आ रहा था. मैंने अलीग□ जाकर उनके खानदान से मलिकर सामग्री □कत्र की और उन पर कराची यूनवर्सिटी से पी□चडी की, जसि अंजुमन तर□्□ी उर्दू पाकस्तिान ने प्रकाशति कयिा. मेरे परीक्षक □लीक अंजुम थे. उनके अलावा मैंने स्त्री आलोचना पर तीन कतिाबें संपादति की हैं, □ामोशी की आवा□, दूसरी फेमनिज्□म और हम, तीसरी ब्लूचस्तिान का अदब और ख्वातीन. चौथी नसाई रद तश्कील है, जसिमें हमने यह देखा है कि मर्दों ने महलिाओं के कसि तरह लखिा है. इसमें □हमीदा रयिा□ ने नून मीम राशदि, मैंने राजेंद्र संहि बेदी, आसफि□ फारु□ी ने अली अब्बास हुसैनी और तनवीर अंजुम ने अ□ी□ अहमद की तहरीरों का जाय□ा लयिा. मेरी जो कतिाब इस व□्त छपने को है, वह है कतिाब दोस्तां, जसिमें 25 लेख हैं. इनमें डॉक्टर असलम □ारु□ी, □ालदिा हुसैन, □हमीदा रयिा□, कश्विर नाहीद, मुनीर नयिा□ी, अहमद □रा□ और कई साहत्यिकारों □वं शायरों के लेखों को प□ा गया है.

- □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□ □□?

-- माहौल तो सा□गार होने लगा था. अदा जा□री आई और उन्होंने □क औरत की हैसयित से अपनी नजिी पहचान के साथ लखिा और सामने आई. उनकी शायरी की सराहना हुई और उन्हें हाथोंहाथ लयिा गया. इसके बाद □हरा नगिाह, कश्विर नाहीद, □हमीदा रयिा□ और परवीन शाकरि आईं. लेकनि मेरे साथ 1970 के दशक में जो नस्ल आई, उसने इस बात पर वरिोध कयिा कि उनके लेखों के वे अर्थ नहीं नकिले जा रहे हैं, जो वह लखि रही है. स्त्री आलोचना स्त्री चेतना पर □ोर देती है. हमने बा□ायदा स्त्री आलोचना पर काम कयिा और बताया कि हमारे लेखों को कसि तरह प□ा जा□. हमने कहा, आप जो समझ रहे हैं, हमने वह नहीं लखिा है और हम जो लखि रहे हैं, आप समझ नहीं रहे हैं. आप सदयिों से बने-बना□ सामाजकि मूल्यों के तहत हमारे करिदार को देखना चाहते हैं, उसी को मद्देन□र रखकर हमारे लेखों को प□ते हैं, औरत या तो आपको □रशि्ता न□र आती है या बदमाश.

- □□□ □□□ □□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□ □□ □□ □□□ □□□-□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□□□□ □□. □□□□□ □□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□□ □□□?

-- मैं बहुत म□बूत □दमों से चली हूं, मैंने कोई शॉर्टकट इस्तेमाल नहीं कयिा. मैं कभी रि□क्शन में नहीं प□ी कि लोग मुझे क्या समझते हैं या क्या कहते हैं. मैंने शुरू में ही लखि दयिा था कि जैसी भी हूं, अच्छी या बुरी, अपने लि□ हूं. मैं □ुद को दूसरों की न□र से नहीं देखती. यह समझती हूं कि जो ता□त मैं इस तरह की बातों में लगाऊंगी, अगर उसे कसिी सकारात्मक काम में लगाऊंगी तो उसका सकारात्मक परणिाम ही आ□गा. आपको आगे ब□ने के लि□ म□बूत □दमों के साथ आगे की सोचकर चलना होगा. रुकावटें तो आती हैं, हर कामयाब आदमी को रुकावटें झेलनी प□ती हैं. मैंने जो लखिा, वह छपवाती रही. इससे मेरा कोई वास्ता नहीं रहा कि कौन मुझे मुशायरे में बुला रहा है और कौन टीवी पर. काम पब्लसिटिी से □्यादा होना चाहि□. कुछ ची□ें अपने □हन में बलि्कुल सा□ होनी चाहि□. □क तो यह कि हम शो बि□ लखिने वाले नहीं हैं कि हम अपना स्कैंडल बनवा□ं और फरि उससे मशहूर हों. तो फरि हमारा काम पीछे रह जा□गा. हम राजनीतज्ञि भी नहीं हैं, हम बुद्धजिीवी हैं. हमें बुद्धजिीवी का करिदार अदा करना चाहि□. राजनीतज्ञि हमसे इशारे लें, हम उनके इशारों पर न चलें.

- □□□□□□ □□□□□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□□□□ □□□□□ □□?

-- यह महलिाओं का संकल्प है. जहां कहीं भी □लत व्यवहार हो रहा है, वहां अगर प्रतरिोध करें तो महलि□ं करें. पाकस्तिान के साथ भारत में भी महलि□ं गंभीर लखि रही हैं. जब वे हमसे मलिती हैं तो ऐसा लगता है कि हम सब □क ही वषिय पर सोच रहे हैं.

- □□□□□ □□□□□□ □□ □□□ □□□ □□□□□□?

-- आंखों में न□ुल्फों में न रु□सार में देखें, मुझे मेरी दानशि मेरी उ□कार में देखें.
सौरंग म□ामीन हैं जब लखिने पर आऊं, गुलदस्ता-□-माना मेरे अश्आर में देखें.
पूरी न अधूरी हों न कमतर हों न बरतर, इंसान हूं इंसान केमयिार में देखें.
रखे हैं □दम मैंने भी तारों की □मीं पर, पीछे हूं कहां आपसे, र□्तार में देखें.

- □□ □□ □□□□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□?

-- बलि्कुल अजनबीपन महसूस नहीं होता. यहां आकर महसूस ही नहीं होता कि हम अपने देश से बाहर हैं. बाहर नकि्लने में सबसे ब□ी परेशानी □ुबान की आती है या फरि खाने-पीने की, लेकनि यहां तो □ुबान □कहै, लबिास □कहै और रवियातें भी □कहैं.

- □□ □□□ □□□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□ □□□ □□, □□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□?

-- शायरी केलि□ कोई □ास वषिय तो होता नहीं है. शायरी तो इंसान का ऐसा इ□हार है, जसिमें हर वषिय समां जाता है. इसीलि□ शायरी में ब□ी गुंजाइश होती है. आंतरकि घटना□ं हों, बाहरी हालात हों, सयिासत हो, मौसम, हुस्न, इश्क या प्राकृतकि दृश्य, सब कुछ इसमें आ जाता है. शायरी न नारेबा□ी है और न ही पत्रकारति. शायरी में सबसे ब□ी ची□ शायरी होना चाहि□. शायर और साहत्यिकार इतना संवेदनशील होता है कि वह जो कुछ लखिता है, उस पर आंतरकि घटनाओं केप्रभाव □रूर प□ते हैं. इसलि□ उसका लखिा हुआ आगे चलकर इतहिास का हस्सिा बन जाता है.

- □□ □□□□-□□□ □□ □□□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□□□□ □□□□ □□□?

-- मैं बहुत □्यादा मुशायरों में शरीकनहीं होती, उन्हीं मुशायरों में जाती हूं, जो कांफ्रेंस केसाथ होते हैं. हर □माने में दो तरह का अदब लखिा जाता है, □कपॉपुलर अदब कहलाता है, जो सभी को अपील करता है और पसंद आता है. दूसरे अदब में □कसतह होती है, उसमें □क्रि होती है, उसे अदब-□-आलयिा कहते हैं. इस तरह पाकस्तिान में भी दो तरह केमुशायरे हो रहे हैं.

- □□□□□□ □□□□□□□ □□□ □□□□ □□□□ □□□-□□□ □□□?

-- अभी मुझे कुछ नाम याद आते हैं, मसलन दाराबानो व□ा, साजदिा □ैदी, □ाहदिा □ैदी, श□ी□ □ातमिा शेरा, मलकि नसीम, शहना□ नबी और शबनम ईशाई आदि.